Vol III Issue IX March 2014 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-3 | Issue-9 | March-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

GRT

देवपुर के कवि लक्ष्मीश

प्रेमचन्द चव्हाण

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, एम. एस. इरानी महाविद्यालय, गुलबर्गा.

सारांशः

कन्नड साहित्य के कई विवादास्पद कवियों में लक्ष्मीश भी एक है। लक्ष्मीश के जन्म, काल, स्थान, जाति में कई विद्वानों में भेद पाया जाता है। लक्ष्मीश अपने पदों में जिस देवपुर का प्रस्ताव करते हैं वह आज के यादगिरी जिल्हा के सुरपुर तहसिल में आनेवाला एक छोटा सा कस्बा है, वहीं कुछ लोग इन्हें चिक्कमंगलूर के देवनुर के मानते हैं। जहाँ कवि अपनी कविता के पदो में देवपुर कहता है तो विद्वान इन्हें देवनुर कहने का अर्थ समझमें नहीं आता। मैसूर के संशोधक श्री. सीताराम जहागिरदार का कहना है कि 'लक्ष्मीश मुलतः देवपुर के है लेकिन दक्षिण कर्नाटक के कुछ बडे कवियों के कुतंत्र के कारण देवपुर के स्थान पर देवनुर कहा जाता है।

प्रस्तावनाः

इस विवाद का प्रारंभ 1931 में चिक्कमंगलूर में चले 'लक्ष्मीश कवि का जयंत्योत्सव' से शुरु होता है। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष कन्नड के विख्यात कवि श्री मास्ती वेंकटेश अयंगार थे, उन्होंने अपने अध्यक्षिय भाशण में 'जेमिजी भारत' का प्रार्थना पद "श्री वधुविनंबक चकोकरंपारेय" से आरंभ करते हैं।

"श्री वधुविनंबक चकोरकं पोरेय भ–
कतावलिय हृत्कुमुद कोरकं विरिये जग–
ती वलयदमल सौभाग्य रत्नाकरं पेर्चिनी मेरेवरिये
आवगं सरस करुणामृतद कलेगलि
तीविदेलनगेय बेल्दीगलं पसरिसुव
देवपुर लक्ष्मीरमणनास्यचंद्रनानंदमं नमगियली"

श्री मास्ती जी ने उपर्युक्त शट्पदी (कविता) आखरी पाद (पंक्ति) में अपने अनुरूप 'चंद्र' शब्द को निकाल कर मुल रचना के साथ छेडछाड कर कवि के साथ अन्याय किया है। 1931 में जि समंच से विवाद का आरंभ हुआ, वहाँ पर जिन विद्वानों ने जो अपने–अपने मत सिद्ध किया उन सबको इकट्ठा कर 1933 में 'कवि लक्ष्मीश' नामक पुस्तक बाहर लाते हैं।

इस पुस्तक में श्री. टी. एस. वेंकटरणय्यनवर के लेखक को उन्होंने नहीं छपा, कारण यही था कि उस लेखन में कवि की भाशा और उपयोगित पदो के अनुरूप लक्ष्मीश को उत्तर कर्नाटक का सिद्ध किया गया था।

जहाँ लक्ष्मीश के काव्य में 'चन्द्र' शब्द का प्रयोग अधिक देखा जा सकता है, कई विद्वानों का मत यह है कि आदिकाल में अधिकतर कवि किसी राजा के अधिन रहकर रचना रचते थे, शायद लक्ष्मीश भी सगर मुन्नुर के राजा देवरस के पिता चंदिमरस के आस्थान के कवि रहे होंगे। दक्षिण के विद्वान 'चंद्र' शब्द निकाल ने का कारण भी यह है कि 'चन्द्र' शब्द से राजा का नाम, स्थान, काल सब का पता चलता है और जो लोग इन्हें दक्षिण का सिद्ध करना चाहते हैं उनकी सच्चाई लोगों के सम्मुख आ जायेगी।

कवि लक्ष्मीश देवपुर के ही है यह स्पश्ट करने के लिए उन्हीं के द्वारा रचित कुछ काव्य की पंक्तियों को देखते हैं–

1) मेरेव निजनगर प्रवेशमं माडुत
क्करोळंदु भीमनं कळुहिदुं देवपुर
देरेय लक्ष्मीशनं व्दारकेगे योगि बिजयंगैसितर्पुदंडु।

5–23

2) मिडिदु कृश्णार्जुनर सरिसकमेतरलवन
कडुशौर्यमं कंडु शंकेयिं देवपुर
दौडेय लक्ष्मीवरं माडिदं तन्न
मैदुननोळालोचनेयनु।

13—64

3) प—परेदवेण्देसेगळगे सीताकुमारर
तिरुगिदर तुरगमिह बनक्कगि देवपुर
दरसलक्ष्मीशराधवनल्लिगैदिदर दुतरतिवेगदिंद।

20—62

4) बिडदे निजतनयनं बैदु गर्जिसि तन्न
मडिदिसहितिरुतिर्द नादिनं देवपुर
दोडेय लक्ष्मीशनं कण्णारे काणबेकेंदु कडुतवकदिंदे।

25—62

उपर्युक्त शट्पदी (काव्य) पंक्तियों को देखने से स्पष्ट हो जाता है, कि कवि हर एक शट्पदी (काव्य) में देवपुर का ही उल्लेख मिलता है। देवपुर और देवनुर इन दो नामों में केवल एक अक्षर का ही व्यत्यास मिलता हैं अगर लक्ष्मीश देवनुर के ही होते तो इन काव्य पंक्तियों में उसका उल्लेख क्यों नहीं है ?यह स्पष्ट है कि कवि लक्ष्मीश सुरपुर तहसिल के देवपुर के ही है।

दक्षिण कर्नाटक के विद्वानो ने कई प्रकार से लक्ष्मीश को चिक्कमंगलूर का सिद्ध किया है, उनका मानना है कि 'देवनूर' यानी देवों का स्थान, देवनूर में गली—गली मंदिर पाये जाते हैं। वहीं देवपुर में एक—दो मंदिरों को छोड और कोई मंदिर नज़र नहीं आते। दक्षिण के विद्वानों क मत पर विश्वास करके अगर हम लक्ष्मीश को देवनूर का समझना भी चाहे तो कवि के काव्य में एक बार भी देवनूर शब्द का प्रयोग नहीं पाया जाता। क्या लक्ष्मीश को अपने गांव के प्रति लगाव नहीं था ? कवि ने कूल 41 बार देवपुर के अलग—अलग अर्थ देनेवाले शब्दों का प्रयोग किया है। वह इस प्रकार है—

1) देवपुर	—	28	
2) देवग्राम		—	01
3) देवनगरी	—	01	
4) गिर्वाणपुर	—	01	
5) अमरपुर		—	01
6) सुरपुर	—	04	
7) सुरनगर		—	01
8) अनिमिश नगर	—	01	
9) दिविजयपुर	—	01	
10) अमर नगरी	—	01	
		कूल —	41

इन उपर्युक्त नामों को देखते हैं तो एक बार भी देवनूर शब्द का प्रयोग नहीं मिलता, क्या कवि को अपने गांव का नाम कहने में को संकोच था ?इस उक्ति को स्पष्ट करने के लिए और कुछ विषयों पर ध्यान देते हैं।

अखिल भारत कन्नड साहित्य सम्मेलन जब दूसरी बार गुलबर्गा में आयोजित किया गया उसमें एक विशेष गोष्ठी केवल कवि लक्ष्मीश पर ही आयोजित किया गया था। सम्मेलन के आयोजन से पूर्व कुछ विद्वान देवनूर एवं देवपुर दोनों स्थानों पर जाकर संशोधन कार्य संपन्न कर आते हैं और गुलबर्गा के उस सम्मेलन में सभी विद्वानों ने कवि लक्ष्मीश को देवनूर का ना कहकर देवपुर का ही सिद्ध किया। उस सम्मेलन में कर्नाटक के कोने—कोने से पदारे सभी विद्वानों का यही मत रहा।

दक्षिण कर्नाटक के कुछ विद्वान कवि लक्ष्मीश को देवनूर का सिद्ध करने के लिए कुछ उदाहरण देने का प्रयत्न किया, मगर ये सारे सादन धरे के धरे रह गये। उन विद्वानों में कवि लक्ष्मीश को देवनूर का सिद्ध करने के लिए इस प्रकार प्रयत्न किया—

1) कवि लक्ष्मीश के काव्य के अन्त में प्रयोगित शब्द 'चन्द्र' को निकाल के देवनूर कहने का प्रयास किया है।
2) दक्षिण के कुछ विद्वानों ने यह दिखलाने का प्रयास किया कि एक शासन मिला है जो कवि लक्ष्मीश को संबंधित है और इससे स्पष्ट है कि कवि देवनूर के ही है। लेकिन बाद में यह स्पश्ट हो गया कि ओ शासन पुराना न होकर कृतक शासन है जो कुछ वर्ष पुर्व ही इसका निर्माण हुआ है। यह विद्वानों द्वारा स्पश्ट होने के पश्चात आज उस शीला शासन की बात कोई भी विद्वान नहीं करता।

दक्षिण के विद्वानों ने जो पहले उदाहरण में जो 'चंन्द्र' शब्द को निकाला है उसका एक कारण यह है कि 'चन्द्र' शब्द एक राजा से संबंधित है। 'चन्द्र' शब्द को विश्लेशित करने से स्पष्ट हो जाता है कि उस समय (काल) में केवल तीन राजा सामने आते हैं। पहला है सगरनाड

के राजा देवरस के पिता चन्द्ररस, दूसरे है चन्द्र नाम से ख्याति प्राप्त छठे विक्रमादित्य और तीसरे हैं उसी समय के राजा रेचरस के आस्थान के कवि 'मदन तिलक' के काव्य में प्रयोगित 'चन्द्रराज' इन तीनों को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि ये सारे एक ही काल लगभग 11–12 शताब्दी के है। और इन राजाओं का स्थान पर भी विचार करे तो भी ये सारे उत्तर कन्नड (सगरनाड) से संबंधित है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि कवि लक्ष्मीश दक्षिण कर्नाटक के न होकर उत्तर कर्नाटक के देवपुर के ही है।

इस उक्ति को विस्तार से देखते हैं–

1) नागवर्मा पांचवे विक्रमादित्य को संबोधित कर एक उपन्यास की रचना करता है। उस कृति में नागवर्मा को 'चन्द्र' नाम से संबोधित करता है। नागवर्मा का समय सन् 1015 माना जाता है।
2) सगरनाड के महामंडेश्वर हैहद वंश के 'चन्द्ररस' को ही 'चन्द्र' कहकर संबोधित कर के ही काव्य की रचना की गई होगी। इनका समय 1040 माना जाता है।
3) चालुक्य के राजा छठे विक्रमादित्य को ही 'चन्द्र' नाम से संबोधित किया जाता था। इनका समय सन् 1074 से 1125 माना जाता है।
4) अगर 'मदन तिलक' के कवि चन्द्र राजा को ही 'चन्द्र' नाम से संबोधित किया होगा। अगर इस उक्ति को माने तो 'जेमिनी भारत' की रचना का काल 11वी सदी मान सकते हैं।

उपर्युक्त सभी उदाहरणों पर ध्यान देते हैं तो 'जेमिनी भारत' कृति के रचना समय सन् 1100 से सन् 1200 मान सकते हैं।

कवि लक्ष्मीश के जाति/वर्ण पर भी विवाद है। लक्ष्मीश के जाति के प्रति भी भेद पाया जाता है। श्री मास्ती जी लक्ष्मीश को 'हेब्बार' जाति का माना है तो, डॉ. कमला हंपना ने तो कवि को 'बेड' समाज का कहती है। अगर लक्ष्मीश को बेड समाज का मानते हैं तो देवनूर में इस जाति के लोग एक भी नहीं मिलेंगे। कुछ विद्वानों ने तो लक्ष्मीश को ब्राह्मण जाति के 'स्मार्थ' वर्ग का सिद्ध किया है। श्री मास्ती जी 1931 के समय कहते थे की कवि लक्ष्मीश के घराने के लोग आज भी जीवित है। मगर समय बितते–बितते कहने लगे कि उनके संबंधी आज एक भी जीवित नहीं है। लेकिन कुछ वर्षों पहले एक महिला कन्नड की दिन पत्रिका 'प्रजावाणी' में अपना साक्षात्कार देती है और कहती है कि मैं कवि लक्ष्मीश उनके पुर्वज है। इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि आज भी कवि लक्ष्मीश के संबंधी जीवित है।

विद्वानों का काम यह होना चाहिए कि वह आईने का काम करे जो सच्चाई है उसे जनता के सामने प्रस्तुत करें ताकि आनेवाली पीढि को सही मार्ग मिले। कन्नड के 'जेमिनी भारत' कृति के रचनाकार लक्ष्मीश पर कन्नड के कई विद्वानों ने अपना मत व्यक्त किया है। श्री. टी. एस. वेकण्णवर लक्ष्मीश की भाषा के आधार पर उन्हें उत्तर कर्नाटक के देवपुर के कहते हैं। कन्नड के प्रख्यात कवि बी. एम. श्री. एवं एम. आर. श्री, अ. न. कृ, कमला हंपना, हामा नायक और इतिहास संशोधक एम. वि. श्रीनिवास, एम. मंजप्प कई विद्वानों ने कवि लक्ष्मीश को आज के यादगिरी जिल्हा के सुरपुर तहसिल के देवपुर ही सिद्ध किया है।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि चाहे कितने भी दक्षिण कर्नाटक के विद्वान कवि लक्ष्मीश को देवनूर का सिद्ध करे फिर भी उनको कामयाबी नहीं मिली। क्योंकि दक्षिण के ही श्रेश्ट विद्वान श्री सीताराम जहागिरदार, डॉ. कमला हंपना जैसे विद्वानों ने ही कवि लक्ष्मीश को देवपुर का सिद्ध कर चुके हैं। कर्नाटक के ज्यादातर सभी संशोधकों का मत यही है कि कवि लक्ष्मीश दक्षिण कर्नाटक के न होकर उत्तर कर्नाटक के ही है। कवि लक्ष्मीश पर कन्नड में कई लेख लिखे जा चुके है लेकिन हिन्दी में काम न के बराबर है। इसी कारण वश मैंने कवि लक्ष्मीश को हिन्दी के पाठकों के लिए ही मैंने इस शोध लेख को लिखने का प्रयास किया है।

सहायक ग्रंथ सूचि :

1.देवपुरद महाकवि लक्ष्मीश – सं. वीरभद्र सिंपी, नेलोगी.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net